अथ वैदिक विवाह पद्धति

भाषा टीका सहित

(पं. अयोध्या प्रसाद गौतम विरचितम्)

भारतीय परम्परा अनुसंधान संस्थान

प्रकाशक

ज्योतिष मठ संस्थान

ईएम-129, नेहरू नगर, भोपाल, मो. नं. 9827322068

pt.vinodgoutam@gmail.com, web.www.jyotishmath.com

अथ विवाह पद्धति

भाषा टीका सहित

(पं. अयोध्या प्रसाद गौतम)

प्रणम्यं सर्वदेवानां गौरी च जगजाननम्।

वर्णानां हितार्थाय विवाह पद्धतिः सृजाम्यहम।।

परमात्मा और गणेशजी को प्रणाम करके वर्णों के हितार्थ विवाह पद्धति को सरलतम, सूक्ष्म व्यवस्था दे रहा हूं।

ऋषि प्रणीत धर्म शास्त्रों के अनुसार दो शब्द

ऋषियों द्वारा शास्त्रों में ८ प्रकार के विवाह कहे गए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं – ब्रह्म, दैव, ऋषि, प्रजापत्य, गन्धर्व, राक्षस, असुर एवं पैशाच। इनमें ब्रह्म विवाह द्वारा ही दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं चिर स्थाई होता है और उसी से धार्मिक संतति भी उत्पन्न होती है।

यद्यपि विवाह पद्धतियों के अनेक संस्करण प्रकाशित हैं फिर भी यह पद्धति आधुनिक शैली में संशोधित हिन्दी टीका अनेक विशेषताओं के साथ प्रस्तुत है जो कर्मकांडियों एवं पुरोहितों व सर्वसाधारण विद्वानों के लिए भी सर्वाधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। इस भारतीय वैदिक विवाह पद्धति में मूल पाठ सर्वग्रन्थ सम्मत कार्य विधि की शुद्धता तथा सभी शास्त्रों, विषयों का उल्लेख इसकी विशेषता है। यही कारण है कि अल्प अवधि में ही इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हो गए हैं फिर भी विद्वान वर्ग की मांग बराबर बनी रहती है। इसकी उपयोगिता का ही प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारतीय ऋषियों में जैमिन, गर्ग, वृहस्पति वशिष्ठ, भृगु, पाराशर आदि ने विविध विधाओं से पड़ने वाले शुभ प्रमाण हेतु विवाह संस्कारों की विवेचनाएं की हैं जिन विद्वानों ने के कथन में अधिकाधिक सम्मतियां हैं उन्हें

रखा है।

इस पद्धति में दक्षिण भारत, उत्तर भारत, मध्य भारत के विद्वानों की वैदिक विवाह पद्धतियों को समयानुकूल, वैदिक ग्रह सूत्र पारिजातक, पाणिग्रहण, विवाह संस्कार आदि के विद्वानों को सक्षम रूप से सम्मिलित किया गया है। भृगु, वशिष्ठ, गर्ग सतवक्य, गौतम, यज्ञवल्कि, वायुनंदन मिश्रकृत समिश्रित मत एवं संग्रहीत पद्धति है। द्विवतजन अपनी क्षेत्रीय परंपरानुसार समयानुकूल पद्धति का उपयोग कर विवाह संस्कार संपन्न कराएं। भारत को विश्व गुरु होने का श्रेय वैदिक विधियों ज्ञान एवं विज्ञान के क्षेत्र में बना रहे इसी कामना के साथ।

–अयोध्या प्रसाद गौतम

(2)

विवाह सामग्री

रोली	२५
अबीर	५०
बुक्का	१०
पाशा चंदन	१
महाराज चन्दन	१ डिबिया
पुष्प माला	१०
छुट्टा पुष्प	२००
तुलसी	२५
दूब	२५
हल्दी की बुकनी	५०
हल्दी गांड	१००
धूपबत्ती, अगर बत्ती	१ पैकेट
आम्रपल्लव	५ पल्लव
पान छुट्टा	२५
लोंग	१० ग्राम
इलायची	१० ग्राम
सोपाड़ी	२५० ग्राम
ऋतु फल	५०० ग्राम
पेड़ा	५०० ग्राम
दोनिया	१५
यज्ञोपवीत	५ जोड़ा
सिन्दूर	१ डिबिया
चावल	५०० ग्राम
दिया	१०
धान का लावा	२५० ग्राम
सिन्दूरिया	१

मौर तागा पाट	१-१
कंगन कलावा	१-१
पीढ़ा नया, रूमाल	२
कलाश लोटा	१-१
जौं दिया रुई माचिस	१०० ग्राम
कन्यादान सामग्री :	
थाली-लोटा	१-१
कोपरी	१
शंख	१
आटे की लोई	१- २० ग्राम
हवन सामग्री :	
समिधा (लकड़ी)	५०० ग्राम
वेदी या कुंड	१
घी-तेल	५०० ग्राम
कुशा	१०
धूपदानी	१५
अगरबत्ती	१ पैकेट
वरण सामग्री	
ब्राह्मण को वस्त्र दान हेतु	धोती-कुर्ता-उपन्ना
वर-कन्या वस्त्र दान हेतु	धोती-कुर्ता
मण्डप	१
सूप	१
सिल	१
लोटा	१
पूर्णपात्र	१ कटोरी
गोबर	१०० ग्राम
शहद	५० ग्राम
बताशा	२०० ग्राम
दही	५० ग्राम
घृत	२५० ग्राम

विवाह क्यों?

इस सृष्टि में विवाह मानव विकास की संवैधानिक एवं शास्त्र सम्मत प्रथम सीढ़ी है। वैदिक काल से ही मानव जीवन के १६ संस्कारों का वर्णन मिलता है। इन्हीं संस्कारों में विवाह संस्कार भी एक संस्कार ही सु-संस्कार वाला सन्तान का जन्मकारक है। बिना वैदिक विवाह संस्कार के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न संतान भला कैसे संस्कारवान हो सकती है। उसे वर्णशंकरी संतान कहेंगे। ईश्वर ने स्त्री-पुरुष दोनों को कुछ विशेषताएं और कुछ अपूर्णताएं दे रखी हैं। विवाह संस्कार के बाद दोनों के सम्मिलन से उत्पन्न संतान ही संवैधानिक संतान है। जो इस लोक में नैतिक का विकास एवं परलोक में उद्धार (मोक्ष) की कारक होती है। इन्हीं लोकोपकारी समाज की वृद्धि को ध्यान में रखकर समाज के शुद्ध विकास हेतु ऋषियों ने संवैधानिक व्यवस्था दी है। जिसे विवाह संस्कार कहते हैं।

(विवाह कर्म में कर्मों की संख्या)

टीका-(१) **उपाहन** अर्थात जूते उतरवाना (२) **वरणं** अर्थार्त पौंची बांधना (३) **वाचा** अर्थात कन्या पिता के वचन (४) **अर्चन** अर्थात मुकुट का पूजन करना (५) **विष्टर** अर्थात आसन (६) **पाद प्रक्षालन** अर्थात पैर धोवें (७) **पुनर्रविष्टरा** अर्थात दूसरा विष्टर (८) **अर्घम्** अर्थात अर्घ (९) **आचमानियम्** अर्थात आचमन (१०) (११) **अंगन्यास** (१२) **प्रतिज्ञा संकल्प** (१३) **अग्नि स्थापन** (१४) **हाथ पीले** (१५) **कुशकण्डिका** अर्थात पंचभूसंस्कार (१६) **वस्त्रदान-गौत्रोचारण** अर्थात साखोचार (१८) **कन्यादान** (१९) **ग्रंथि-बंधन** अर्थात गणजोड़ा (२०) **हवन** (२१) **अन्तरपट** (२२) **परिक्रमा** अर्थात फेरे (२३) **सप्तपदी** अर्थात सात-पांच वचन (२४) **बामागी** अर्थात दाहिने से बायें होना (२५) **दक्षिणा संकल्प** अर्थात विवाह कराई दक्षिणा (२६) सिर्जन देवताओं पर अक्षत छोड़ना (२७) **अभिषेक** आशीर्वाद उपयुक्त क्रम से करने हैं।

विवाह अनुक्रमणिका

(5)

साधुस्ततो विष्टर पाद्यविष्टरं, अर्घाचमं वै मधुपर्क वाक्च मे।
उत्सृजत्तृणान्यत्त्ववथ वेदिकर्म, स्यादग्निमभ्यर्चय कौतुकाद्वरः।।
आनीय कन्या वसनं वराय, ददाति दाता वरवस्त्रदानम।
परस्परं दातृक प्रन्थिबन्धनं, संकल्प-कन्या वरणं चर होमः।।
लाजाहुतिर्ग्राम्यवचः सुमंगली, परिवर्ति वामे ग्रथनं विधत्ते।
स्विष्टाहुतिः स्यादभिषेकदानं, कृत्वा वरः कौतुकमन्दिरं ब्रजेत।।

सर्वप्रथम वर को पीढ़े पर बैठाएं, फिर कन्या का पिता कुशा लेकर वर के हाथ में दे उस कुशा को वर बाएं पैर के नीचे रख ले। इसके बाद पाद्य यानी एक दोने में जल दे। उस जल से वर बाएं हाथ से बायां व दाहिने हाथ से दाहिना पैर धोवे। फिर दूसरा विष्टर (कुशा को

अथ द्वारपूजा (द्वारचार)

अनन्तर मंगल पाठ करके इन मंत्रों से द्वार पर वर की विधिवत पूजन कराएं तथा गौरी गणेश का भी पूजन होता है। फिर आवाहित देवताओं का विसर्जन करें।

ततो द्वारदेशे वरश्च आचम्य प्राणानायम्य-ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आनो भद्रादीन मंगलमन्त्रान् पठेत्।। संक्ङल्प।। ततो दाता हस्ते जलाक्षतद्रव्यं चादाय देशकालौ सक्ङर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं/वर्माहं/गुप्तोहं अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्यायाः उद्वाहाङ्गभूतं द्वारदेशमागताय वरायवरार्चनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विग्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये। यथोपचारैः गणपत्यादि देवान् संपूजन्य परपूजनं कर्यात। ॐ विराजो दोहोऽसीति पादप्रक्षालनम्।। ॐ गन्धद्वारामिति गन्धम्।। ॐ अक्षन्नमीमदन्त० इत्यक्षतान्।। ॐ याऽआहरज्ज० इतिपुष्पमालाम्। दक्षिणाद्रव्यम्।। कृतैतत् वरपूजनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं मनसोद्दिष्टां दक्षिणां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे।। कृतैतत् वरपूजनकर्मणः

सांगता सिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानां गोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे। ऐशिक यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्ट कामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। इति देवान् विसृज्य। प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव हि तद्विष्णोःसम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यौ वन्दे तमच्युतम्।।

।। इति द्वारपूजा।।

दुर्गा-जनेऊ

कन्या का भाई अपने पिता के आगे बैठकर ऊपर जल छिड़के व आचमन करे। पिता अक्षत-पुष्प लेकर गौर-कलश पर छोड़ दे। हाथ में कुश-द्रव्य और जनेऊ लेकर निम्न संकल्प पढ़े-

अद्य अमुक गोत्रः अमुक नामकोऽहं स्वभगिन्याः विवाहांगभूत

द्वारपूज्याख्ये कर्मणि इमे यज्ञोपवीते द्रव्यादि सहिते अस्मै अमुक गोत्राय अमुक नामकाय वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

संकल्प करके जनेऊ और रुपया वर के हाथ में दे दे। वर उसे लेकर माथे में लगाए और जनेऊ ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण आदि ५ व्यक्ति मिलकर वर को वह जनेऊ निम्न मंत्र से पहना दें-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल मस्तु तेजः।।

वंश पूजनम्

वर दो बार आचमन करे। कन्या का भाई और वर दोनों खड़े होकर गले मिलें। दोनों एक दूसरे को पान खिलावें। बैठकर नाई को न्यौछावर, ब्राह्मण को दक्षिणा दे। फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

माल्यार्पण - (जयमाल) शास्त्र सम्मत एवं भारतीय परंपरानुकूल है।

विवाह संस्कार - विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है। परंपरानुकूल शास्त्र विधान ही संस्कार है।

आचार्य उद्‌बोधन-

यावेदलोकेन चतुर्चराणि, गुल्मंलतावै भूमि कर्णाणि प्रकृत्या वसान्तंतां सृष्टिरूप विश्वस्य सूपं तां.मां. नमामि।।

अस्याम् आयोजनानाम महत्व पूर्णः विवाह संस्कार जातम्।।

उपास्थिति प्रबुध माननीयाः सर्वे जनाः उभय पक्षीय संबन्धि जनानां।।

भातृभगन्यादीनां समक्षे अत्रम् माल्यार्पणम् कार्य कृमंप्रारम्भतेः।।

आजीवनेन सफल दाम्पत्य जीवनं कंक्षायाः कुमारिनाः शुशीलानामन्याः कन्यायाः।।

चिरंजीव श्री धनंजय, वरस्य गृहस्थ धर्म परंपरायांवृम्ह विवाह विधिनांमाल्यार्पणम् करोमि।।

अवयाः सर्वे उपस्थित जनाः एकाग्र जित्तेन तालिका सहितं आशिषांप्रदेहि।।

भावार्थ - उपस्थित उभय पक्षीय संबंधिजनों एवं विशिष्ठ उपस्थिति महानुभावों आप सभी के समक्ष शास्त्रानुकूल विवाह कार्य कृमका माल्यार्पण संस्कार संपन्न होने जा रहा है। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए आप सभी की उपस्थिति एवं शुभकांक्षामयी आशीष

अति महत्वपूर्ण है। इस ऋषि प्रणीत छोटी सी शब्दावली को ध्यानपूर्वक आत्मसात करें। एवं इन नये युगलों को शुभ आशीष दें।

आज की इस पावन परम् बेला में दो प्राणी अपने-अपने अस्तित्वों को समाप्त कर सम्मिलित इकाई का निर्माण कर रहे हैं। स्त्री और पुरुषों में ईश्वर ने कुछ विशेषताएं और कुछ अपूर्णताएं दे रखी हैं। विवाह सम्मिलन से संवैधानिक एक दूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करते हैं। गाड़ी में लगे दो पहियों की तरह प्रगति पथ पर अग्रसर होते हैं जाना ही विवाह का उद्‌देश्य है। आज से कोई किसी पर हुकूमत नहीं जमाएंगे। वरन दोनों अपने इच्छाओं को गौण और साथी की आवश्यकताओं को मुख्यमान कर सेवा और सहायता का भाव रखेंगे। यही जयमाल कार्यक्रम का मुख्य उद्‌देश्य है। दोनों ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि देव शक्तियों और सत् पुरुषों के आशीर्वाद से हम एक दूसरे के गले का हार बन रहे हैं। इसी उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु जयमाला पहनकर अपनी जिज्ञासा प्रकट करें। कन्या ॐ ब्रह्म विवाह विधिनार्पण मस्तुः कहते हुए पहले जयमाल पहनावेंगी। तत्पश्चात् वर भी इसी मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या को जयमाल पहनावेंगे।

आभूषण चढ़ाना - गणेश पूजनम्

कन्या आचमन करके 'मम अस्या' यहां से लेकर 'करिष्ये' तक का पाठकर संकल्प करे। इसके अनन्तर गणेशजी का पूजन करे। पूजन के पहले 'ॐ सुमुखश्चैक' को पढ़कर आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, दीप, नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल, दक्षिणा आदि का समर्पण करे। प्रत्ये वस्तु समर्पण करते समय उसके समर्पण का मंत्र पढ़ते जाये, अन्त में 'अनेन पूजनेन' यह कहकर प्रणाम करे।

पुनराचम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुक नामन्याः कन्यायाः धमप्रजोत्पादनगृह्यपरिग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाख्यं सिंगार, आभूषणादिग्रहण संस्कारं करिष्ये। तदङ्गतया विहितं निर्विघ्नतार्थं गणपतिपूजनं स्वस्तिवाचनं नवग्रहपूजनं कलशस्थापनं च करिष्ये इति संकल्पः।। गणपत्यादिपूजनं कुर्यात्।। अथ गणेशपूजनम्।। वरपक्षात् सर्ब वस्त्राभूणादिकं मण्डपमानीय, ॐ मनो जूतिर्जुपतामाज्यस्य

बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।। इति मन्त्रेण वस्त्रा-भूषणादिकमुपरि अक्षतान् क्षिपेत्। पश्चात् गणेशाद्यावाहितदेवान् स्पर्श कारयित्वा, नापित-पत्नी-द्वारा गुप्तगारे स्थापयेत्।

तदन्दरं मण्डपे कन्यामानीय संकल्पपूर्वकं कन्याहस्त द्वारा ॐ कार-लक्ष्मी-कुबेरान् अर्चयेत्। कन्यादक्षिणहस्ते जलं स्थाप्य,

वर पक्ष की ओर से वस्त्र, आभूषण आदि समस्त देय वस्तु को लाकर ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य० से प्रतिष्ठ तक मंत्र पढ़कर उन सभी वस्तुओं पर अक्षत छिड़कें और उनको गणेशादि देवों का स्पर्श कराकर नाउन द्वारा कोहबर

चढ़ाव सामग्री पूजन -

वर पक्ष से आए चढ़ाव के सामान पर कन्या अक्षत-पुष्प छोड़े। ब्राह्मण ताक-पाट लेकर कलश में छवाकर निम्न मंत्र से पहले कन्या के बाएं फिर दाहिने हाथ में बांध।

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनं त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।

निम्न मंत्र के साथ माथे में रोली लगावे -

ॐ शुभिके शिर आरोह शोभयन्ती मुखं मम।।

अंजुलि भरे -

वर पक्ष से गुड़,चावल, हल्दी, सुपारी, फल, द्रव्य आदि सामग्री लेकर कन्या की पांच बार निम्न मंत्र से अंजुलि भरें-

ॐ वागर्था विव संतृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।

अंजुलि भरने के बाद यह सामग्री दोनों ओर के ब्राह्मण, नाई और लगायतों में बांट दें। जेठ (वर का बड़ा भाई) गोदी भरे। जेठ अपने दुपट्टे में पंचमेवा, १ गरी का गोला और द्रव्य लेकर मंडप में कन्या की ओर मुंह करके खड़ा हो। ब्राह्मण पहले जेठ के माथे में तिलक करें फिर जेठ कन्या के आंचल में मेवा फल से निम्न मंत्र से गोदी भरे।

ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणाम् उदयस्तव।।

जेठ कन्या के ऊपर अक्षत छोड़ता हुआ निम्न मंत्र से आशीर्वाद दे।

ॐ सौभाग्यमस्तु, ॐआरोग्यमस्तु, ॐ कल्याणमस्तु।

फिर नाई को न्यौछावर, ब्राह्मण को दक्षिणा देने के बाद कन्या हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र करे।

ॐ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर।।

कन्या के हाथ में सिंघोरा (सिन्दूर की डिब्बी जो चढ़ाव में वर पक्ष से आती है) देकर जल की धार देता हुआ कन्या का कोहबर में ले जाकर उसे दही बताशा खिला दे।

(10)

अथ पाणिग्रहण संस्कार (भांवर परिक्रमा)

उत्तर मुखे आचार्यः कन्यापिता पश्चिमाभिमुख उपविश्य (वर सम्मुखम्)

पंडित पूर्व की तरफ बैठे, उत्तर को मुंह करके वर के सामने।

(प्रथमं वेदीं रचयित्वा)

(विवाहसमये कन्यापिता स्नातः)

विवाह के समय कन्या का पिता स्नान करे या हाथ-पैर धोकर बैठे।

(शुचिः शुक्लाम्बरं धृत्वा)

कन्या का पिता शुद्ध धोती, दुपट्टा श्वेत वस्त्र धारण करे।

(ततः कन्यापिता वेदिकामुपगच्छेत्)

कन्या का पिता मंडप में पिश्चम को मुंह करके वेदी के पास बैठ जाए।

(ततः कन्यापिता सादरं वरमाह्वयेत्)

कन्या का पिता आदर से वर को मंडप में बुलावे। तथा एक दोने में चावाल लेकर दो-दो मुट्ठी चावल शाला मंत्र के बीच वर के पैरों में छोड़ें।

(वरस्तत्रागत्य उपानहौ त्यजेत्)

वर आसन से अलग जूते निकाल दे, फिर पंडित यह मंत्र पढ़े-

शाला मंत्र उपाहन त्याग (जूते उतारना)

ॐ अथ वाराह्या उपानहौ उपमुञ्चतेऽग्नौ हवो देवाघृतकुंभं प्रवेशयां चक्रुस्तोवाह्यः सम्बभूव तस्माद्वाराह्यो उपान्हौ-उपमुञ्चते।।१।।

ॐ अथ इत्यर्थे वाराह्या द्वितीय उपानहौ उपमुञ्चते।।२।।

शाला समाप्त होने पर वर जूते उतार दे, पुनः आसन के चारों कोण एवं बीच में पांच जगह अक्षत पुंज्य को पीढ़े पर रखकर दाता और वर पीढ़े को उठाकर मंडप देवताओं का स्पर्श करावे एवं पीढा वर को बैठने का देवे। वर का हाथ पकड़कर आदर से पीढ़े पर बैठावे, स्वयं भी बैठकर आचमन प्राणायाम करें।

ततः भद्रपीठोपरि पञ्चसु स्थाने अक्षतपुञ्जान् कृत्वा ततो।

(कन्यापिता वरपादौ प्रक्षालयति)

नीचे लिखे श्लोक से कन्या का पिता वर के पैर धोवे।

यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे।
तत्फलं पांडव श्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने।।

(हस्तौप्रक्षाल्य)

कन्या का पिता हाथ धोवे। मंत्र –

ॐ अपवित्र पवित्रो वा सर्वा.।।

(वर पूर्वाऽभिमुख उपविश्य)

कन्या का पिता वर को पूर्व की ओर मुंह करके आसन पर बैठावे।

(वारिण वरात्मानं सिंचेत्)

कन्या पिता (दाता) वर के ऊपर दूर्वा से गंगाजल का छीटा लगावे। मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः।। तीन बार पढ़ें।

(वरस्यासनेऽक्षतान् क्षिपेत्)

नीचे लिखे श्लोक से वर के आसन पर चावल छोड़ें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

(वरः प्राङ्मुखश्चोपाविश्य)

वर उस आसन पर पालथी मारकर पूर्व को मुख करके बैठे।

(सर्वजणेभ्योऽक्षातान् द्यात्)

पण्डित सब सज्जनों के हाथ में चावल दें।

(वरहस्ते साक्षतद्रव्यं धृत्वा)

वर के हाथ में चावल सहित दक्षिणा दें।

(स्वस्तिवाचनंपठेत)

फिर यह श्लोक पढ़ें :-

हरि ॐ गणानान्त्वा गणपति, हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति।
हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति, हवामहे व्वसोमम।।
ॐ द्योः शांतिरन्तरिक्ष, शांतिः पृथिवी शांतिरातः शांतिरोषधयः शांतिर्व्वनस्पतयः शांतिर्व्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्ब्रह्मा शांतिः सर्व, शांतिः शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि।।५।। ॐ शांतिः शांति सुशांतिर्भवतु।
ॐ मनोजूतिर्ज्जषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्ठं यज्ञ

समिमन्दधातु। विश्वदेवा सऽइहमादयन्तामोम् ३ प्रतिष्ठः। एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेनयजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म्।।६।।

सर्व सज्जन जल चावल गणेशजी पर छोड़ दें।

(कन्यापिता प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्)

कन्या का पिता जल, चावल, पैसा लेकर संकल्प करे)

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यो नमः परमात्मने श्री पुराणापुरुषोत्तमाय अद्यश्री ब्रह्मणोऽह्निद्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे त्यादिना।

फिर कन्या का पिता और वर से उसकी प्रतिष्ठा करावें।

(कन्यापिता वरस्य सम्बोध्य)

ॐ साधुर्भवानास्तामर्चचिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात्।

(ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते)

यजमान ऐसा कहे कि आप भले प्रकार की वृत्ति वाले हो मै तुम्हारा पूजन करता हूं। कन्या पिता के इस प्रकार कहने पर वर कहे कि करो।

(वरस्य मुकुटार्चनम् कुर्यात्)

कन्या का पिता नीचे लिखे मंत्र से पांचों अंगुली रोली से भर कर वर के मुकुट पर लगावे और नीचे लिखे मंत्र पढ़े –

ॐ रोचन्ते रोचनादिभिस्तरणीर्विश्वदर्शितो ज्योतिष्टकृदसि सूर्य विश्वमाभासि रोचनम्।।

आसन के चारों कोण और बीच में अक्षत पुंज को रखकर दाता और वर पीढ़े उठाकर मण्डप देवताओं का स्पर्श करावे। नाई वर के अंजलि से दीपक लेकर ईशान में रख दें। वर के हाथ में पहने हुए बरायन को उतरवा कर नया पीढ़ा दें।

आचार्य निम्न मंत्र पढ़ें –

ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य ऋत्विग् वैवाहय्यो राजा प्रियः स्नातकः।।

पीढ़ा का चावल गणेशजी के आगे गिरा दें। पीढ़ा को वर के बैठने की जगह रख दें। कन्या–पिता वर का दाहिना हाथ पकड़े तथा निम्न मंत्र पढ़ें –

ॐ साधु भवानास्ताम्। अर्चयिष्यामो भवन्तम्।

वर कहे - **ॐ अर्चय।**

कन्या-पिता वर का दोनों हाथ पकड़कर पीढ़ा कर बिठा कर तथा स्वयं भी अपने स्थान पर बैठ जाएं। कन्या-पिता हाथ में कुशा या आम्रपल्लव ले ..... दे।

आचार्य पढ़ें - **ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः।**

कन्या-पिता कहे- **ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।**

वर कहे - **ॐ विष्टरः प्रतिगृह्णामि।**

कन्या-पिता वर के हाथ में कुशा या आम्रपल्लव दे दे।

वर उसे लेकर अपने दाहिने पांव के नीचे रख ले। (ब्राह्मणेतर बाएं पैर के नीचे रखें)

ब्राह्मण निम्न मंत्र पढ़ें -

ॐ वर्ष्मोऽष्मि समाना ना मुद्यतामिव सूर्यः।
इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभि दासति।।

पाद्य दे - कन्या पिता १ प्याला में जल ले।

आचार्य मंत्र पढ़ें - **ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम्।**

कन्या-पिता कहे- **ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्।**

वर कहे - **ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि।**

कन्या-पिता प्याला वर को दे दे। वर उसे लेकर अपने बाएं हाथ में रखे। वर दाहिने हाथ से २ बूंद जल अपने पांव पर छिड़क ले।

आचार्य मंत्र पढ़ें -

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोह मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।

तिलक करे - कन्या पिता हल्दी-अक्षत से वर के माथे पर निम्न मंत्र से तिलक लगावे-

ॐ कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वर मौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूणामणिः।।

वर को निम्न मंत्र से माला पहना दें-

ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामा मेधायै येन्द्रियाय।

ताऽअहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।

दूसरा विष्टर दे - कन्या-पिता कुशा या आम्रपल्लव लेकर चुपचाप वर को दे दे। वर उसे लेकर अपने दूसरे पांव के नीचे रख ले। अर्घ-कन्या पिता १ प्याला में जल, दूब, अक्षत, फूल, रोली, चंदन, हल्दी आदि रखकर अपने दाहिने हाथ में ले।

आचार्य मंत्र पढ़ें - **ॐ अर्घो ऽअर्घो ऽअर्घः।**

कन्या-पिता कहे- **ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्।**

वर कहे - **ॐ अर्घः प्रतिगृह्णामि।**

वर कन्या-पिता के हाथ से जल का प्याला लेकर अपने माथे में लगावे।

ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामान वाप्नवानि।

प्याले का २ बूंद जल ईशानकोण में गिरा दें और प्याला कलश के पास रख दें।

ॐ समुद्रं व प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत।
अरिष्टा ऽस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः।।

आचमन - कन्या-पिता एक दूसरे प्याले में जल ले।

आचार्य मंत्र पढ़ें - **ॐ आचमनीयम्-आचमनीयम्-आचमनीयम्।**

कन्या-पिता कहे- **ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्।**

वर कहे - **ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि।**

वर प्याले के जल से २ बार आचमन कर ले। नाई प्याला लेकर मण्डप के बाहर फेंक दे।

आचमन का मंत्र -

ॐ आमागन् यशसा स गुगं सृज वर्चसा तन् मा गुरु।
प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।।

टिप्पणी - अर्ख लोकाचार में कन्यादान वाले गेडुआ या लोटा को ही वर के चारों ओर तीन बार घुमाया जाता है।

मधुपर्क- कन्या पिता १ कांसे के पात्र में अथवा १ दोनिया या प्याला में दही, शहद, घी मिलाकर अपने बाएं हाथ में रखें और दाहिने हाथ में उसे ढांक लें।

आचार्य मंत्र पढ़ें - **ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः।**

कन्या-पिता कहे- **ॐ मधुपर्कम् प्रतिगृह्यताम्।**

वर उसे देखे और कहे -

ॐ मधुपर्कम् प्रतिगृह्णामि। ॐ मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीखे।

कन्या-पिता मधुपर्क वर के हाथ में दे। वर उसे लेकर बाएं हाथ में रखे।

आचार्य मंत्र पढ़ें -

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर् बाहुभ्याम्
पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।।

वर दाहिने हाथ की अनामिका (तीसरी) अंगुली तथा अंगूठा से मधुपर्क ३ बार मिलाकर सामने भूमि पर थोड़ा सा छिड़क दे।

ॐ नमः श्यावास्या याऽन्न शने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।

वर ३ बार मधुपर्क अपने मुख में लगा ले। (प्रासन करे)।

ॐ यन् मधुनो मधव्यं परम गुंग रूप मन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन
परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्यो ऽन्नादोऽसानि।।

बचा हुआ मधुपर्क नाई लेकर बाहर फेंकदे। वर दो बार आचमन करे। तत्पश्चात वर दाहिने हाथ से अपने अंक निम्न मंत्रों से स्पर्श करे।

मुख छुवे- **ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु।** नाक- **ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।**

आंख- **ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।** कान- **ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।**

हाथ- **ॐ वाह्वोर्मे बलमस्तु।** जंघा- **ॐ ऊर्वो मे ओजोऽमस्तु।**

दोनों हाथ से परा शरीर निम्न मंत्र से छू ले-

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस तन्वा मे सह सन्तु।

कन्या-पिता एक प्याला या पिहानी में १ तृण खड़ा करे।

वर तथा कन्या-पिता दोनों उसे पकड़ लें। कन्या-पिता कहे-**ॐ गौर्.....गौर्.....गौरः।**

वर कहे -

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसा दित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मा गाम नागा मदितिं मा विधिष्ट।
मम चामुष्य च उभयोः पाप्माहतः। ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु।

कन्या-पिता तृण को छोड़ दे। वर तृण को तोड़ कर ईशान कोण में फेंक दे।

गोदान-कुछ लोग यहां पर गोदान भी करते हैं।

(अग्नि स्थापन) दक्षिण भारत में

शुद्ध मिट्टी से यथा स्थान के अनुसार चौकोर वेदी बनावे। वेदी पर भूसी-कंकड़ आदि हटाकर साफ कर दे। कुशा से वेदी को बटोर-बुहार कर शुद्ध कर दें। इन कुशों को ईशान कोण में फेंक दें। गोबर से वेदी को लीप दें। स्रुवा के मूल से वेदी पर ३ रेखा (लाइन) खींच दें। (यह रेखा-पश्चिम से पूर्वाग्र। दक्षिण से उत्तर के क्रम से एक-एक रेखा खींचनी चाहिए।)

दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली तथा अंगूठा से-तीनों रेखा से १-१ चुटकी मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें तथा वेदी पर जल छिड़क दें। तत्पश्चात कांसे के पात्र में अग्नि मंगाकर चुपचाप वेदी पर रख दें। अग्नि की सुरक्षा के लिए थोड़ी सी लकड़ी अग्नि पर रख दें। शपथ ग्रहण के बाद कुशकांडिका का विधान करें।

धोती संकल्प - कन्या-पिता वर के लिए एक पीली धोती व दुपट्टा लेकर निम्न मंत्र से संकल्प करे-

अद्य पूर्वोक्त कल्पित विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं इदं वस्त्रद्वयं स्वकन्यायाः विवाह्यर्थम् अमुक

गोत्राय अमुक नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुम्भमहं सम्प्रददे।

वर धोती लेकर पहने। दो बार आचमन करले। कन्या-पिता कन्या की धोती और चादर गणेशजी को छवाकर वर को भी स्पर्श करा दे और कन्या को पहनने के लिए कोहबर में भीतर भिजवा दे। तत्पश्चात वर निम्न मंत्रों को पढ़े -

ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टीनामभिशस्ति पावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्रा ननु सं व्यवस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।

ॐ या अकृन्तन्नवयम् या अन्वत। याश्च देवीस् तन्तू नभितो ततन्थ। तास् त्वा देवीर् जरसे सं व्ययस्वा ऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।

'जरां गच्छ' कन्या की धोती तथा 'या अकृन्त' कन्या की चादर देने के लिए मंत्र है। निम्न मंत्रों से वर धोती-दुपट्टा धारण करे -

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदिष्ट रश्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस पोषमभि सं. व्ययिष्ये।।

ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा वृहस्पती।

यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।

तत्पश्चात् कन्या को मण्डप में बुलावे।

कन्या हाथ में चावल, गुड़ व सिंधोरा (सिन्दूर की डिब्बी जो चढ़ावे में वर पक्ष की ओर से आई) लेकर मंडप में आवे (मौली बंधी रहनी चाहिए)। कन्या के आते समय आचार्य मंत्र शांति पाठ करे –

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष गुंग शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधय शांतिः वनस्पतयः शांतिः विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रम्ह शांतिः सर्व गुंग शांति शांतिरेव शांतिः सामा शांतिरेधि।।

कन्या मंडप में आकर पिता के आगे पश्चिम की ओर मुख करके बैठ जाए।

कन्या की माता भी मंडप में आकर कन्या–पिता के दाहिने ओर बैठे। कन्या के माता–पिता की गांठ बांध दीजो। कन्या के हाथ का चावल–गुड़ नाई ले ले।

निम्न मंत्र से वर तथा कन्या दोनों एक–दूसरे की ओर देखें (लोकाचार में वर–कन्या दोनें पान बदलते हैं)।

ॐ समजन्तु विश्वदेवाः समापो हृदयानिनौ।

सं. मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।।

टिप्पणी–ॐ परिधास्यै–वर को धोती तथा ॐ यशसा–वर के दुपट्टा धारण करने का मंत्र है।

वरस्त्रीणां हरिद्रे श्रीः सदाऽस्तु मे।।

वर, कन्या दोनों के हाथ में दक्षिणा और कलावे का एक–एक सिरा दे दें।

(प्रथमं वरपक्षे पुरोहितः शाखोच्चारणम्)

पुष्पोपहार (माल्यार्पण) – वर–वधू एक–दूसरे को अपने अनुरूप स्वीकार करते हुए, पुष्प मालाएं अर्पित करते हैं। हृदय से वरण करते हैं। भावना करें कि देव शक्तियों और सत्पुरुषों के आशीर्वाद से वे परस्पर एक–दूसरे के गले के हार बनकर रहेंगे। मंत्रोपचार के साथ पहले कन्या वर को फिर वर कन्या को माला पहिलाएं।

आचार्य पुष्पोपहार पहनाते समय मंत्र पढ़ें –

ॐ यशसा माद्यावपृथिवी, यशसेन्द्रा बृहस्पती।
यशो भगश्च माविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम।।

।। हस्तपीतकरणकी ।।

शिक्षा एवं प्रेरणा - कन्यादान करने वाले कन्या के हाथों में हल्दी लगाते हैं। हरिद्रा मंगल सूचक है। अब तक बालिका के रूप में यह लड़की रही है। अब यह गृहलक्ष्मी का उत्तरदायित्व वहन करेगी, इसलिए उसके हाथों को पीतवर्ण-मंगलमय बनाया जाता है। उसके माता-पिता ने लाड़ प्यार से पाली है उसके हाथों में कोई कठोर कर्तव्य नहीं सौंपा। अब उसे अपने हाथों का नव-निर्माण के अनेक उत्तरदायित्व संभालने को तैयार करना है, अतएव उन्हें पीतवर्ण मांगलिक-लक्ष्मी का प्रतीक-सृजनात्मक होना चाहिए। पीले हाथ करते हुए कन्या परिवार के लोग उस बालिका को यही मौन शिक्षण देते हैं।

दाता- भावना करें कि कन्या वर को सौंपते हुए उसके अभिभावक अपने समग्र अधिकार भी सौंपते हैं। कन्या के कुल गोत्र अब पितृ परंपरा से नहीं, पति परंपरा के अनुसार होंगे। कन्या को यह भावनात्मक पुरुषार्थ करने तथा पति को उसे स्वीकार करने या निभाने की शक्ति देवशक्तियां प्रदान कर रही है।

कन्या- वरयोः परस्परमभिमुखीकरणम्। (कन्या वरश्च परस्परं निरीक्षेथाः) ततः कन्याप्रदकर्तृकं ग्रंथिबन्धनं कुर्यात्।

तत्पश्चात दोनों पक्ष के आचार्य, पुरोहित वर-कन्या का गोत्रोच्चार करें। वह इस प्रकार है - एक-एक दोनिया में द्रव्य या चावल भर कर वर और कन्या के हाथ में रखके सर्वस्व ॐ कहलवाएं।

पहले वर की तरफ से पुरोहित शाखोच्चार पढ़ें :-

ॐ ओं श्रीमत्पंकजविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलश्चन्द्रो भास्करवित्पालवरुणः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः।। प्रद्युम्नो नलकुबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ।।१।। अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रावस्मिन् मङ्गल-मण्डपाभ्यन्तरे स्वस्तिश्रीमद्विविध-विद्या-विचार-चातुरी-विनिर्जित-सकलवादि-वृन्दोपरि-विराजमान-पद-पदार्थ-साहित्य-रचनामृतायमान-काव्यकौतुक-चमत्कार-परिणित-निसर्ग-सुन्दर-सारस्वत-सहजानुभाव-गुणनिकर-गुम्फितयशः सुरभीकृत-मंगलमण्डपस्य स्वस्ति-श्रीमतः शुक्लय-जुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनः अमुकगोत्रस्या-ऽमुकप्रवरस्या-

ऽमुकशर्मणः प्रपौत्रः एवं शुक्लयजुर्वेदा० शर्मणः, पौत्रः तथा शुक्लयजु० शर्मणः पुत्र प्रयतपाणिः शरणंप्रपद्ये, स्वस्ति संवादेषूभ योर्वृद्धिः, वर कन्यायोर्मङ्गलमास्तांवरश्चिरंजीवी भवतात्, कन्या चा सवित्री भूयात्। इति वरपक्षे शाखोच्चारः ।।१।।
गंगा गोमतिगोपतिर्गोविन्दगोवर्दनौ। गीता गोमयगोरिजा गिरिसुता गंगाधरो गौतमः।। यातत्रीगरुड़ो गदागिरिगजा गंभीरगोदावरी। गंधर्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु वो मंगलम्।।२।। ईशानो गिरिशो मृडः पशुपतिः शूली शिवः शंकरो, भूतेशः प्रथमाधिपः स्मरहरो मृत्युंजयो धूर्जटिः। श्रीकंठो वृषभध्वजो हरभवो गंगाधरस्त्र्यंबकः, श्रीरुद्रः सुखृन्द-वन्दितपदः कुर्यात् सदा मंगलम्।।३।। अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रावस्मिन् मंगल मंडपाभ्यन्तरे स्वस्ति श्रीमद्विविध-विद्यालंकार-शरद्विमल रोहिणी-रमण-रमणीयोदार-सुन्दर-दामोदर-पाद-मकरन्द-वृन्द-शेखर-

प्रचण्डाखंड-मंगल-पूर्णपूरेंद्र-नन्दन-चरणकमल-भक्तिदुपरि-महानुभाव-सकल-विद्याविनीत-निजकुलकमल-कलिका-प्रकाशनैकभास्कर-सदाचार सच्चरित-सकल-सत्प्रतिष्ठा-श्रेष्ठ-विशिष्ठ-वरिष्ठस्य स्वस्ति-श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदांतर्गत-वाजसनेय-माध्यंदिनीयशाखाऽध्येतु, अमुकगोत्राया-ऽमुकप्रवरस्य ऽमुकदर्शणः प्रपौत्री, शुक्लजजुर्वेदांतर्गतवाज० शर्मणः पौत्री, शुक्लयजुर्वेदांतर्गतवाज० शर्मणः पुत्री, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवादेषूभयोर्वृद्धिर्वर-कन्ययोर्मंगलमास्तां वरश्चिरंजीवी भवतात् कन्या च सावित्री भूयात्। इति कन्या पक्षे शाखोच्चार।।१।।

(कन्यायाः पिता निजपुत्री संकल्पयेत्। निजपत्म्या ग्रंथिबंधनं कृत्वा)

कन्या का पिता कन्या का संकल्प अपनी स्त्री से गणजोड़ बांधकर करे।

(दाता शंखस्थदूर्वाक्षत फलपुष्पचन्दनजलान्यादाय-

जामतृदक्षिणकरोपरि कन्यादक्षिणकरं निधाय)

कन्यादान

पौंपुजी वाली परांत लड़ी के सामने इस प्रकार रखें कि कन्यादान का जल सी परांत में गिरे। आटे की लोई बनाकर लड़की के दोनों हाथ पर रख दें और उस लोई पर १ खड़ी हल्दी, १ खड़ी सुपारी, १ रुपया या सोना आदि एवं कुशा रख दें। कन्या के हाथ के नीचे वर का दाहिना हाथ रखवाएं। कन्या-वर दोनों के हाथों के नीचे कन्या के माता-पिता अपना-अपना दाहिनी हाथ लगावें। कन्या का भाई पौंपुजी वाले गेडुआ या लोटा से जल की धा लोई पर इस प्रकार छोड़े कि धार टूटे नहीं।

कन्यादान-संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकललोकपितामहेन ऐरावतपुण्डरीक श्रीकूर्मवाराहसप्तद्वीपमण्डितायां पृथिव्यां जम्बूदीपे भरतखंडे निखिलजलपावने आर्य्यावर्तैकदेशे बहुक्षेत्रान्विते भरतखंडे श्रीगंगा-यमुना-सरस्वती गोदावरी नर्मदा सरयू बहुतीर्थसम्पन्ने पाव विष्णुलोकरूद्रलोक ध्रुवलोक निवास सिद्धयर्थं श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यामुकक्षेत्रे शुभासम्वत्सरे अस्मिन् अमुकायने गत सूर्ये अमुकवासरे अमुकऋतौ अमुकनामनक्षत्रे यथायोगकरणमुहूर्ते वर्तमान चन्द्रतारानुकूले एं ग्रहगुणविशिष्ठायां अस्यां पुण्यबेलायां। अमुकगोत्रो अमुकराशिः अमुक नामाऽहम्

सपत्नीकोऽहं शतगुणीकृत ज्योतिष्टो मातिरात्र शतफल प्राप्तिकामश्च अस्मत् कुलोत्पन्नाम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः प्रपौत्रीम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पौत्रीम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पुत्रीम वृद्धस्य प्रमाता अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः प्रपौत्रीम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पौत्रीम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पुत्रीम् अमुकी नाम्नीम् इमां कन्यां यशाशक्ति अलंकृता सुपूजिताम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः प्रपौत्राय अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पौत्राय अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः पुत्राय माता अमुक गोत्रस्य ..... नाम्नः प्रपौत्राय ..... गोत्रस्य ..... नाम्नः पौत्राय .....गोत्रस्य ..... नाम्नः पुत्राय..... अमुक गोत्राय अमुक नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

संकल्प करके कन्या का हाथ वर के हाथ में दे देवें। (कन्या के हाथ में रखी लोई

वर के हाथ में कन्या से दिला दें।) माता-पिता अपना हाथ हटा लें।

आचार्य कन्या के भाई को तिलक लगा दे। कन्यादान लेकर वर कहे -

ॐ ।। स्वस्ति।। द्यौस्तवा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु असौ देवी।

आचार्य कन्या को पिता के आगे से उठाकर वर के दाहिनी ओर बिठा दें।

कन्या -पिता वर से कहे-

ॐ यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽया सह।
धर्मेचार्थे कामे च त्वयेयं नाऽति चरितव्या।।

वर कहे - **ॐ नाऽति चरामि।**

आचार्य कहें -

ॐ कोऽदात् कस्माऽदात् कामोऽदात्। कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते।।

प्रार्थना - कन्या पिता हाथ जोड़कर निवेदन करे -

गौरी कन्यामियां श्रीमन्! यथाशक्ति विभूषिताम्।
श्रेष्ठाय श्रीमते तुम्भयं दाता श्रीमन्! समाश्र।।

कन्ये ममाग्रतो भूयः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठतो भूयः त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयात्।।
मम वंश कुले जाता यावद् वर्षाणि पालिता।
तुभ्यं श्रीमन्! मया दत्ता पुत्र पौत्र प्रवर्धिनी।।

पौंपुजी -कन्या पिता और माता दोनों क्रम से ३ बार वर का, २ बार कन्या का परात के जल से पांव धोयें और जल अपने माथे में लगावें। आचार्य क्रमशः पढ़ें -

ॐ वराय नमः। वर चरणाभ्यां नमः।
ॐ इदं जलं कन्या कुमारी चरणेभ्यो नमः।।

हाथ धोकर कन्या के पिता व माता वर के माथे में तिलक करें-

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्म कामार्थ सिद्धये।।

लड़की का हाथ पीला करें (हथेली में हल्दी लगावें)।

कन्या के पिता और माता रुपया-सोना-बर्तन आदि जो देना हो, उसका संकल्प करें।

संकल्प -

ॐ एतत् कन्यादन समये रजतं चंद्र दैवतं अमुक गोत्राय अमुक नाम्ने वराय पात्राय श्रेष्ठाय तुम्भमहं सम्प्रददे।।

वर के हाथ में द्रव्य आदि दे देवें।

इसी तरह परिवार वाले भी पौंपुजी करें।

गोदान-वर (कन्यादान ग्रहण दोष दूर करने हेतु) यथाशक्ति गोदान करें।

संकल्प-

अद्य पूर्वोक्त कल्पित ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् मम कन्यादान ग्रहण जनित दोष निरसनपूर्वक श्री परमेश्वर प्रीति द्वारा दीर्घायु-बल-पुष्टतादि शुभफल प्राप्तये गोनिष्क्रयीभूतम् इदं द्रव्यं सांगता सहितं।

वर को गोदानकर (गोदान संकल्पः)

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे अमुकगोत्रोऽहं अमुकनामाऽहं इमां गां सवत्सां गोविन्ददैवतं यथावस्तु यथोपस्कर सहितां

तरुणीरूप संयुक्तां सुशीलां च पयस्विनीम् कामाक्षीं वातन्निष्क्रयिणीं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतं रजतंचंद्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुक नाम्नेवदाय तुभ्यमहं संप्रददे।

वर के द्वारा (गोदानसंकल्पः)

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे अमुकगोत्रोऽहं अमुकनामाऽहं भार्य्या प्रतिग्रहदोषनिवारणार्थं इमां गां सवत्सां गोविन्ददैवतं यथावस्तु यथोपस्कर सहितां तरुणीरूप संयुक्तां सुशीलां च पयस्विनीम् कामाक्षीं वातन्निष्क्रयिणीं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतं रजतंचंद्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुककशर्म्मणं ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

वैश्य के यहां आश्रित को बछिया देवें।

(पुनः भूयसीं दक्षिणां दद्यात्)

वर ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा दें, फिर पंडित वर कन्या दोनों पर चावल छोड़े, नीचे

लिखे मंत्र से –

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणामुदयस्तव।।

(कन्या वरयोर्वस्त्रग्रंथिपूजनम्)

वर कन्या दोनों के वस्त्रों में गांठों की प्रतिष्ठा पूजन करें।

ॐ एतन्ते देव.।। पूजन करें। **ॐ यम्ब्रह्म.।।**

आचार्य वर कन्या दोनों के वस्त्रों की गांठ बांद दे। मंत्र –

गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम्।

।। ग्रन्थिबन्धन।।

दिशा और प्रेरणा – वर–वधू द्वारा पाणिग्रहण एकीकरण के बाद समाज द्वारा दोनों को एक गांठ में बांध दिया जाता है। दुपट्टे के छोर बांछने का अर्थ है दोनों के शरीर और मन से एक संयुक्त इकाई के रूप में एक नई सत्ता का आविर्भाव होना। अब दोनों एक दूसरे के साथ पूरी तरह बंध गए हैं। ग्रंथिबन्धन में धन, पुष्प, दूर्वा, हरिद्रा और अक्षत यह पांच

चीजें भी बांधते हैं। पैसा इसलिए रखा जाता है कि धन पर किसी एक का अधिकार नहीं रहेगा। जो कमाई या सम्पत्ति होगी उस पर दोनों का संयुक्त अधिकार होगा। खर्च करने में दोनों की सहमति से योजना एवं व्यवस्था बनेगी। दर्वो का अर्थ है - कभी निर्जीव न होने वाली प्रेम भावना दूर्वा क जीवन तत्व नष्ट नहीं होता, सूख जाने पर भी वह पानी डालने पर हरी हो जाती है। इस प्रकार दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए अजस्त्र प्रेम और आत्मीयता बनी रहे। चंद्र चकोर की तरह एक दूसरे पर अपने को न्यौछावर करते रहें। अपना कष्ट कम और साथी का कष्ट बढ़कर मानें, अपने सुख की अपेक्षा साथी के सुख का अधिक ध्यान रखें। अपना आंतरिक प्रेम एक-दूसरे पर उड़ेलते रहें। हरिद्रा का अर्थ है - आरोग्य एक-दूसरे के शारीरिक, मानसिक, स्वास्थ्य को सुविकसित करने का प्रयत्न करें। ऐसा व्यवहार न करें, जिससे साथी का स्वास्थ्य खराब होता हो या मानसिक उद्वेग पैदा होता हो। अक्षत सामूहिक-सामाजिक विविध उत्तरदायित्वों का स्मरण कराता है।

दम्पत्यो रक्षणार्थाय पटग्रन्थिम् करोम्यहम्।।

श्रीदेवदेव कुरु मङ्गलानि सन्तानवृद्धिं कुरू सन्ततञ्च।
दनायुर्वृद्धि कुरू इष्टदेव, मद्ग्रन्थिबन्धे शुभदा भवन्तु।।

क्रिया और भावना - ग्रन्थिबन्धन, आचार्य या प्रतिनिधि या कोई मान्य व्यक्ति करे।

दुपट्टे के छोर एक साथ करके उसमें मंगल-द्रव्य रखकर गांध बांध दी जाए। भावना की जाए कि मंगल-द्व्यों के मंगल-संस्कार सहित देवशक्तियों के समर्थन तथा स्नेहिलों की सद्भावना के संयुक्त प्रभाव से दोनों इस प्रकार जुड़ रहे हैं, जो सदा जुड़े रहकर एक दूसरे की जीवन लक्ष्य यात्रा में पूरक बनकर चलेंगे।

ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः, समापो हृदयानि नौ।
सं मातारिश्वा सं धाता, समुदेष्ट्री दधातु नौ।

।। वर-वधू की प्रतिज्ञाएं।।

दशा एवं प्रेरणा -किसी भी महत्वपूर्ण पद ग्रहण करने के साथ शपथ समारोह भी अनिवार्य रूप से जुड़ा रहता है। कन्यादान, पाणिग्रहण बन्धन हो जाने के साथ वर-वधू द्वारा और समाज द्वारा दाम्पत्य बंधने की स्वीकारोक्ति हो जाती है।

।। यज्ञीय प्रक्रिया।।

हवन विधान का उद्देश्य-शपथ ग्रहण के बाद उनकी श्रेष्ठ भावनाओं के विकास और पोषण के लिए यज्ञीय वातावरण निर्मित किया जाता है। होम की आहूतियां देते समय

यह भावना दोनों के मन में आना चाहिए कि दाम्पत्य जीवन में बाधक जो भी कुसंस्कार अब तक मन में रहे हों, उनको स्वाहा किया जा रहा है। किसी से गृहस्थ के आदेशों के उल्लंघन करने की कोई भूल हुई हो तो उसे अल्प एक स्वप्न जैसी बात समझकर विस्मरण कर दिया जाए।

टिप्पणी- (वर पक्ष से कहीं गौरी-गणेश की पूर्ति लाई जाती है। अतः उचित होगा कि उन्हीं पूर्तियों का पूनन इस समय हो।)

वर कन्या के सीधे हाथ को थामकर यह मंत्र पढ़ें :-

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु।

(श्रीअमुकदेवी) पर कन्या का जो नाम हो ले।

अथ आचार्यवरणम् - **अद्य कर्तव्य-विवाह-होमकर्मणि आचार्य कर्मकर्त्तुम एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्णिं ब्राह्मणं आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

वेदिका का निर्माण कर अग्नि स्थापना कर ब्रह्माजी का वर्ण एवं आचार्य वर्ण अग्नि की पूजा - पोक्षणा पात्र प्रणीता पात्र स्थापनम् आदि।

।। अथ कुशकाण्डिका प्रारंभः ।।

(पंचभूसंस्कारान् कुर्यात्)

अब नीचे लिखे मंत्रों से वेदी का संस्कार कवाएं।

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्कराभस्मादिरहितायाम्)

आचार्य वेदी को देख ले कुछ अशुद्धो वस्तु तृणादि न हों।

(हस्तमात्रपरिमितान् चतुरस्त्रभूमि कुशैः परिसमुह्य)

एक हाथ भर चतुष्कोण अर्थात चौकोर वेदी पर कुशाओं से जल का छींटा लगावे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि त्यजेत्)

उन कुशाओं को ईशान दिशा में रख दें।

(गोमयोदकेनोपलिप्य) वेदी पर गौ के गोबर से लीपें।

(स्त्रुवमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरूल्लिख्य)

स्त्रुवे की जड़ से वेदी पर तीन लकीरें (लाइनें) खीचें।

(उल्लेखनक्रमेण अनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदुमुद्धृत्य)

कनकी अंगुली के पास की अंगुली और अंगूठे से वेदी की उन रेखाओं पर से कुछ

मिट्टी ऊपर की उछालें।

(जलेनाभ्युक्ष्य) फिर कुशा से जल का छींदा लगावे।

(नूतनकांस्यपात्रै अग्निमानीय स्थापन कुर्यात्)

नए कांसे के पात्र या सकोरे में अग्नि मंगाकर, अपने आगे सराई से ढक्कर रख लें। फिर वर तथा कन्या का पिता नीचे लिखे मंत्र से आवाहन करे।

(सम्पूज्य प्रार्थना) पूजन कर हाथ जोड़ें इस मंत्र से -

ॐअग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रवैदेवान-आसादयादिह।।१।। अग्नये नमः

(कन्या पिता करश्च स्त्रुवस्य प्रतिष्ठापूजनम् कुर्यात्)

यजमान और वर इन मंत्रों से स्त्रुवे की प्रतिष्ठा पूजन करें।

ॐ एतन्ते देव सवित.।। (पूजनम्) पूजन करें।

आचार्य स्वाहा करावे और आहुति के बाद स्त्रुवे का बचा हुआ घी प्रोक्षणीपात्र में भी डालता जाएं।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये.।।१।।

सर्वसम्मता से **(इतिमनसा)** ये आहुति मन से देवें।

आधार आहूतियां आवश्यक हैं।

ॐ इंद्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय.।।२।।

(इत्याधारौ) इन आहुतियों का नाम ही आधार है।

ॐ अग्नये स्वाहा-इदमग्नये.।।३।।

ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय.।।४।

(इत्याज्य भागौ) ये दो आज्यनाम आहुति है।

ॐ भूः स्वाहा-इदमग्नये न मम।।५।।

(अथ जयहोमः)

ॐ चित्तञ्च स्वाहा। इदं चित्ताय.।।१।।

ॐ चित्तिश्च स्वाहा।। इदं चित्त्यै.।।२।।

ॐ आकूतं च स्वाहा।। इदमाकूताय.।।३।।

ॐ आकूतिश्च स्वाहा।। इदममाकूत्यै.।।४।।

ॐ विज्ञातं च स्वाहा।। इदम्! विज्ञाताय.।।५।।

ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा।। इदं विज्ञात्यै.।।६।।
ॐ मनश्च स्वाहा।। इदं मनसे. ।।७।।
ॐ शक्वरीश्च स्वाहा।। इदं शक्वरीभ्य.।।८।।
ॐ दर्शश्च स्वाहा। इदं दर्शाय.।।९।।
ॐ पौर्णमासञ्च स्वाहा।। इदं पौर्णमासाय.।।१०।।
ॐ बृहच्च स्वाहा।। इदं बृहते.।।११।।
ॐ स्थन्तरञ्च स्वाहा।। इदं स्थन्तराय.।।१२।।
ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्रायवृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै व्विशः समनमन्त सर्वाः स उग्र स इहव्यो बभूव स्वाहा।।१३।।

(इति जया होमः) यह १३ जया आहुतियां हैं।

(अथ अभ्यातान-होमः)

ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम् पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या

स्वाहा।। इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम।।१।।
ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानाधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा।। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।।२।।
ॐ यमः पृथिव्याऽअधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् क्षत्रेऽस्यामशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा।। इदं यमाय पृथिव्याऽअधिपतये न मम।।३।।

(अथ प्रणीतोदक स्पर्शः)

प्रणीता के जल का अग्नि में छींटा लगावे।

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा।। इदं वायवे अ्तरिक्षस्याधिपतये न मम।।४।।
ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यसयां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्ययस्यां देवहूत्या

स्वाहा।। इदं सूर्याय दिवोऽधपितये न मम।।५।।

ॐ चंद्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्मकर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं चंद्रमसेनक्षत्राणामधिपतये न मम।।६।।

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवत्वसिमन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधितये न मम।।७।।

ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम।।८।।

ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्!
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं वरुणाय अपामधिपतये न मम।।९।।

ॐ समुद्रः स्त्रोत्यानामातिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यां
स्वाहा।। इदं समुद्राय स्त्रात्यानामधिपतये न मम।।१०।।

ॐ अन्न साम्राज्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं मन्नाय साम्राज्यानामधिपतये.।।११।।

ॐ सोम ऽओषधीनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं सोमाय औषधीनामधिपतये न मम।।१२।।

ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
स्वाहा।। इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम।।१३।।

ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यसिमन् क्षत्रेऽस्यामा

शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या स्वाहा। इदं रुद्रायपशूनामधिपतये न मम।।१४।।

(अथ आज्य होमः)

निम्न मंत्रों से घी की आहुति देवे–

ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवता सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदय राजारुणोऽनुमन्यतां यथेय स्त्रीपौत्रघं न रोदात् स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।११।।

ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि प्रबुध्यतामिय स्वाहा।। इदमग्नये.।।२।।

ॐ स्वस्ति नोऽग्ने दिव आपृथिव्या विश्वानि धेह्यऽयथायदेत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र स्वाहा।। इदमग्नये.।।३।।

ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्नऽआयुः। अपैतु मृत्युरमृतन्नऽआगाद्वैवस्वतो नोऽअभयं कृणोतु स्वाहा।। इदं वैवस्वताय न मम।।४।।

(ततो अन्तःपट)

कन्या, वर दोनों की एक वस्त्र से ओट करके आचार्य अग्नि में नीचे लिखे मंत्र को मन में पढ़कर आहुति छोड़ें।

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थायतेऽअन्यइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते श्रण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा।।

इदं मृत्यवे न मम।।५।।

फिर उस वस्त्र की ओट हटा लें।

(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः) प्रणीता के जल का छींटा लगावें।

(अनेन वाऽयम् होमः) इस रीति से हवन करें।

(अथ लाजाहुतिः) अब खीलों की आहुति दिलवाएं।

ततो वधूमग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः लाजा होमं

कुर्यात्। तो वराञ्जलिपुटोमरिसंलग्नध्वञ्जलिस्थघृताभिधारित वधूभ्रातृदत्त शमी पलाशमिश्रैर्लाजैर्वधू कर्तृको मंत्रपाठपूर्वको होमः।।

कन्या को आगे वर को पीछे कर और मुंह पूर्व की ओर करके वर की अंजलि पर कन्या की अंजलि रखकर कन्या का भाई वर और कन्या दोनों के हाथ में छाज में से खील औ जांड के पत्ते और ढाक की लकड़ी घी में भिगोकर दे। वे अग्नि में नीचे लिखे मंत्र से पहली आहुति दें।

ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षता। स नोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा।। इदं अर्यम्णे न मम।।१।।

इसी प्रकार नीचे लिखे मंत्र से दूसरी आहुति दें।

ॐ इयं नार्य्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा।।इदमग्नये न मम।।२।।

इसी प्रकार नीचे लिखे मंत्र से तीसरी आहुति दें।

ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं

तदग्निरनुमन्यतामिय स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।३।।

(ततो वधू दक्षिणहस्तं सांगुष्ठम् गृह्णाति वरः)

इसके बाद वर, कन्या के सीधे हाथ का अंगूठा अपने सीधे हाथ में थाम आगे लिखा मंत्र पढ़ें।

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत श्रणुयाम शरदः शतम्।।४।।

(अथ वधूमग्रेरूत्सरतः प्राङ्मुख पूर्वोपकल्पिते दृष्टदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः)

कन्या आगे होकर उत्तर में जो पाषाण (बाट) रक्खा है अपने सीधे पैर का अंगूठा पूर्व मुख हो उसके लगाव। मंत्र –

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व स्थिराभ। अतितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः।।

कन्या अगाड़ी, वर पिछाड़ी ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित अग्नि की इस मंत्र से परिक्रमा करें।

ॐ तुभ्यमग्ने नर्य्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह।

पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह।।

(पठन परिक्रमेत्)

पहली परिक्रमा करावे अर्थात यह पहला फेरा हुआ।

(ततः पश्चाद्ग्नेः स्थित्वा लाजाहोम। सांगुष्ठहस्तगृहणाश्मारोहण गाथागायनाग्नि प्रदक्षिणानि पुनरपि द्विस्थैव कर्त्तव्य)

इस प्रकार अग्नि के पीछे खड़े होकर लाजाहोम, अंगूठे के साथ हस्तग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान और अग्नि की प्रदक्षिणा करें।

(पुनरेवं विधाय)

(एता नव लाजाहुतयः। सांगुष्ठहस्तगृहणत्रयं अश्मारोहणत्रयं। गाथागान त्रयं च समपद्यते)

इस प्रकार तीन बार नव लाजाहुति, तीन बार हस्ताग्रहण, अश्मारोहण तीन बार, गाथागान तीन बार, अग्नि की तीन परिक्रमा करने से पूर्ण कृत्य संपन्न होता है। आचार्य दूसरी और तीसरी परिक्रमा (फेरा) उपरोक्त विधि से क्रमानुसार संपन्न करवाएं।

(ततोऽवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरञ्जलिस्थ शूर्पकोणेन वधूर्जुहोति)

बची हुई जो खील है कन्या का भाई छाज की कोण से कन्या के हाथों पर गेरे और कन्या अग्नि में उनकी आहुति दे। इस मंत्र से –

ॐ भगाय स्वाहा। इदं भगाय न मम।।

(अस्थाग्ने वरः पश्चात् वधूस्थततः तूष्णीमेव चतुर्थ परिक्रमणं कुरूतः)

फिर कन्या को पीछे और वर को आगे कर अग्नि की मौन चौथी परिक्रमा (फेरा) करावें। इस प्रकार यह चौथा फेरा हुआ।

(ततो वरश्च कन्या च उपविश्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः)

वर कन्या दोनों अपने-अपने आसन पर बैठ जाएं फिर आचार्य कुशा के ब्रह्मा से मिले अर्थात कुशा अपने घोंटे से ब्रह्मा तक मिला लेवे।

(आज्येन प्रजापत्यं जुहुयात्)

फिर आचार्य अग्नि में घी की आहुति दें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

इति मनसा।।

यह आहुति मन में बोलें।

(अत्र प्रोक्षणीपात्रे आहुति-शेषाज्यप्रक्षेपः)

स्त्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दें और आचार्य निम्न श्लोक पढ़ें।

मण्डपं मधुपर्कश्च लाजाहोम परिक्रमा।
यावत्सप्तपदी नैव तावत् कन्या कुमारिका।।

अर्थ - मण्डप छावने से तो घर की शोभा हुई और मधुपर्क खाने से वर के देह की शुद्धि हुई और लाजा जो खोल है उनके हवन करने से देवता प्रसन्न हुए और परिक्रमा से अग्नि प्रसन्न हुई। जब तक सप्तपदी न हो तब तक कन्या की कुंवारी संज्ञा है। ऐसा शास्त्रोक्त वाक्य है।

सप्तपदी

वर और वधू अत्तर मुंह करके खड़े हों। नाई लावा या ऐपन की सात कुरौनी या गुड़ला बना दे। आचार्य वर-वधू को सात पग चलने को कहे। वर-वधू पहले दाहिना फिर बांया पग धरें। आचार्य निम्न मंत्र पढ़ें -

ॐ एक मिषे विष्णु स्त्वा नयतु।।१।।
ॐ द्वे ऊर्जे विष्णु स्त्वा नयतु।।२।।
ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णु स्त्वा नयतु।।३।।
ॐ चत्वारि मयो भवाय विष्णु स्त्वा नयतु।।४।।
ॐ पञ्च पशुभ्यो विष्णु स्त्वा नयतु।।५।।
ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णु स्त्वा नयतु।।६।।
ॐ सखे सप्तपदा भव, सा मा मनुव्रता भव, विष्णु स्त्वा नयतु।।७।।

सात पग चलने के बाद वर-वधू अपने-अपने स्थान पर बैठ जाएं।

पहले कन्या पक्ष के आचार्य कन्या के सात वचनों को कहें-

कन्या वचन -

१. तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञ दानं मया सह त्वं यदि कर्म कुर्याः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी।।

कन्या पहला वचन यह कहती है कि कोई भी तीर्थ, यात्रा, व्रत, उद्यापन, यज्ञ और दान

आदि कर्मों को यदि मुझे साथ में लिए करना स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग में आऊँ।

२. हव्य प्रदानै रमरान् पितृन कव्य प्रदानैर्यदि पूजयेथाः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयम् जगाद-कन्या वचनं द्वितीयम्।।

कन्या दूसर वचन कहती है कि देवताओं के लिए हव्यदान और पितरों के लिए कव्यदान करते समय यदि मुझे साथ में रखना स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग में आऊं।

३. कुटुम्ब रक्षा भरणे यदि त्वं कुर्या पशुनां परि पालनञ्च।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं तृतीयम्।।

कन्या तीसरे वचन में कहती है कि परिवार और गउ आदि सभी पशुओं का पालन-पोषण करना मेरे अधीन रखना यदि आप स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग में आऊं।

४. आय व्ययौ धान्य धनादिकानां पृष्ट्वा निवेशं च गृहे निदध्याः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं चतुर्थम्।।

कन्या चौथा वचन यह कहती है कि अन्न तथा धन आदि जो कुछ घर में आवे उन सबको संचित रखना और मेरी सलाह से उचित रूप से खर्च करना यदि आप स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग में आउं।

५. देवालयाराम तड़ाग कूप वापी र्विदध्याः यदि पूज्येथाः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं पञ्चमम्।।

पांचवे वचन में कन्या कहती है कि यदि आप मंदिर, बाग, तालाब, कुआं या बावणी आदि तैयार करावें तो उनके प्रतिष्ठा-पूजन आदि कर्मों में मुझे भी साथ रखना स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग आऊं।

६. देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदा विदध्याः क्रम-विक्रयौ त्वम्।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं षष्ठम्।।

छटे वचन में कन्या यह कहती है कि आप देश अथवा विदेश में यदि कोई व्यापारिक वस्तुओं को खरीदने बेचने का प्रबंध करें तो उसमें यदि मेरी भी सलाह आप स्वीकार करें तो मैं आपके वाम भाग में आऊं।

७. न सेवनीया यदि पारकीया त्वया भवोद्भाविनि कामनीति।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचनं सप्तमम्।।

सातवें वचन में कन्या कहती है कि परायी स्त्री चाहे कितनी ही सुन्दर क्यों न हो पर आप उसका सेवन कभी नहीं करने की यदि प्रतिज्ञा करें तो मैं आपके वाम भाग में आऊं।

वर का प्रतिवचन -

आचार्य वर के पांच वचनों को कहें।

१. क्रीडा शरीर-संस्सकार-समाजोत्सव-दर्शनम्।
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषितभर्तृका।।

२. विष्णुर्वैश्वानरः साथी ब्राह्मण-ज्ञाति-बान्धवः।
पञ्चं ध्रवमालोक्य स साक्षित्वं ममागताः।।

३. तव चित्तं मम चित्ते वाचा वाच्यं न लोपयेत्।
व्रते मे सर्वदा देयं हृदयस्थं वरानने!।।

४. मम तुष्टिश्च कर्तव्या बन्धूनां भक्तिरादरात्।
ममाऽऽज्ञा परिपाल्यैषा पातिव्रतपरायणे!।।

५. विना पत्नी कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्त्तते।
तस्मात्त्वं मम विश्वस्ता भव वामाङ्गगामिनी!।।

अन्यश्च

मदीयचित्तानुगतश्च चित्तं सदा मदाज्ञापरिपालनं च।
परिव्रताधर्मपरायणा त्वयं कुर्याः सदा सर्वमिदं प्रयत्नम्।।

वर के भी पांच वाक्य हैं। ठीक है जब तक मैं घर पर रहूं तब तक तुम क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद करो! शरीर में उबटन, तेल लगाओ, चोटी गूंथो, सामाजिक उत्सवों और देवताओं के दर्शन करो, फिर हंसी-मजाक करो, पराये घर जाओ, पर जब मैं घर पर न रहूं, परदेश में रहूं तब इन सभी बातों से मुंह मोड़ लेना होगा।।१।। विष्णु, अग्नि, ब्राह्मण स्वजातीय भाई-बंधु और पांचवे ध्रव (ध्रवतारा) यह सब मेरे साक्षी हैं।।२।। हमारे चित्त के अनुकूल चित्त रखना और हमारे वाक्य का उल्लंघन नहीं करना, जो कुछ मैं कहूं उसको सदा अपने हृदय में रखना- इस प्रकार मेरे पति-व्रत का पालन करना।।३।। मुझे जिस प्रकार संतोष हो वही कार्य करना और रमाहे भाई-बंधुओं के प्रति आदर के साथ भक्तिभाव रखना। हे पतिव्रता! धर्म का पालन करने वाली! यही मेरी आज्ञा का पालन करना होगा।।४।। बिना पत्नी के गृहस्थाश्रम धर्म का पालन नहीं हो सकता अतः तुम मेरी विश्वासपात्र बनो। अब तुम मेरी वामांगी बनो।।५।।

वर का शपथ ग्रहण-

१. मितव्ययेन गार्हस्थ-सञ्चालने हि नित्यदा।
प्रयतिष्ये च सोत्साहं, तवाहमनुगामिना।।

आज से मैं देवदत्त शपथपूर्वक घोषणा करता हूं कि मैं सदैव वित्तव्ययी रहूंगा और फिजूलखर्ची से बचूंगा, आप (पत्नी का नाम) के असमर्थ हो जाने पर भी गृहस्थ के अनुशासन का पालन करूंगा।

२. समृद्धि-शांति-शांतीनां, रक्षणाय तथा तव।
व्यवस्थां वै करिष्यामि, स्वशक्तिवैभवादिभि।।

आज से तुम्हारे सुख-दुख तथा प्रगति सुरक्षा की व्यवस्था करने में अपनी शक्ति और साधन आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूंगा। मेरी जिन आदतों से तुम्हें दुख हो उन आदतों व संगतियों से में दूर रहूंगा।

३. यत्नशीलो भविष्यामि, सन्मार्गसेवितुं सदा।
आवयोः मतभेदाश्च, दोषान्सेशोध्य शांतितः।।

और अपनी और से मधुर भाषण और मधुर शब्द का सम्बर्धन का पूरा प्रयत्न करूंगा।

मतभेदों और भूलों का सुधार शांति के साथ करूंगा। किसी के सामने तुमको लांछित-तिरस्कृत नहीं करूंगा।

४. भवत्यामसमर्थायां, विमुखायाञ्च कर्मणि।
विश्वासं महयोगगञ्च मम प्राप्स्यास त्वं सदा।।

तथा तुम्हारे असमर्थ या अपने कर्तव्य से विमुख हो जाने पर भी मैं अपने सहयोग और कर्तव्य पालन में रत्तीभर भी कमी नहं रखूंगा और ना ही नशेबाजी जैसे दुर्व्यवसन, अहंकार, छल-कपट नहीं करुंगा।

५. विकासाय सुसंस्कारैः, सूत्रैः सद्भाववद्धिभिः।
परिवारसदस्यानां, कौशलं विकसाम्यहम्।।

साथ ही मैं परिवार के सदस्यों में सुसंस्कारों के विकास तथा उन्हें सद्भावना के सूत्रों में बांधे रहने का कौशल अपने अंदर विकसित करूंगा और दाम्पत्य जीवन की प्रगति में बाधा बनने वाले कोई भी कार्य नहीं करूंगा।

आचार्य शिक्षा - भूल के कारण कोई किसी को न तो दोष दे, न संदेह की दृष्टि से देखे। इसी प्रकार कोई अन्य नशेबाजी जैसा दुर्व्यसन रहा हो या स्वभाव में कठोरता,

स्वार्थपरता, अहंकार जैसी कोई त्रुटि रही हो, तो उसका त्याग कर दिया जाता है, साथ ही उन भूलों का प्रायश्चित करते हुए भविष्य में कोई ऐसी भूल न करने का संकल्प भी करना है, जो दाम्पत्य जीवन की प्रगति में बाधा उत्पन्न करे।

पूर्ववत् – 'मदीयचित्तानुगतम्' इत्यादि।

कन्या का शपथ ग्रहण- (परंपरा पश्चिमोत्तर भारत देहरादून पर्वतीय क्षेत्र)

१. स्वजीवनं मेलयित्वा, भवतः खलु जीवने।
भूत्वा चार्धांगिनी नित्यं, निवत्स्यामि गृहे सदा।।

मैं शोभाकांक्षिणी शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करती हूं कि आज से मैं अपने जीवन को आपके साथ संयुक्त रूप से नए जीवन की सृष्टि करूंगी। इस प्रकार घर में हमेश सच्चे अर्थ में अर्द्धांगिनी बनकर रहूंगी। किसी नकारात्मक सोच से आपको अमर्यादित शब्दों का प्रयोग कर आपको आहत नहीं करूंगी।

२. शिष्टतापूर्वकं सर्वैः, परिवारजनैः सह।
औदार्येण विंधास्यामि व्यवहारं च कोमलम्।।

और आपके परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अंग मानकर सभी के साथ

शिष्टता बरतूंगी, उदारतापूर्वक सेवा करूंगी, मधुर व्यवहार करूंगी तथा सदैव सकारात्मक सोच रखूंगी। तुम्हारे लिए जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गई है, उसी दृढ़ता से स्वयं में पत्नीव्रत धर्म का पालन करूंगी।

३. गृहस्यार्थव्यवस्थायां, मन्त्रयित्वा त्वया सह।
संचालनं करिष्यामि, गृहस्थोचित-जीवनम्।।

आज से गृह व्यवस्था में तुमको प्रधानता दूंगी। आमदनी और खर्च का कार्य तुम्हारी सहमति से करने की गृहस्थोचित जीवनचर्या अपनाऊंगी और मैं अपने आपको आपकी प्यारी पतिव्रता पत्नी बनकर दिखाऊंगी।

४. त्यक्तवालस्यं करिष्यामि, गृहकार्ये परिश्रमम्।
भर्तुर्हर्ष हिं ज्ञास्यामि, स्वीयामेव प्रसन्नताम्।।

मैं आलस्य को छोड़कर परिश्रमपूर्वक गृह कार्य करूंगी। इस प्रकार आपकी प्रगति और जीवन विकास में समुचित योगदान करूंगी। जिस कार्य से आपको अशांति बनें ऐसा कोई भी कार्य नहीं करूंगी।

५. श्रद्धया पालयिष्यामि, धर्मं पातिव्रतं परम्।

सर्वदैवानुकूल्येन पत्युरादेशपालिका।।

मैं पतिव्रतधर्म का पालन करूंगी, आपके प्रति श्रद्धाभाव बनाए रखकर सदैव आपके अनुकूल रहूंगी। मैं कपट-दुराव कभी नहीं करूंगी तथा आपके निर्देशों के अविलंब पालन का अभ्यास करूंगी।

६. सुश्रूषणपरा स्वच्छा, मधुर-प्रियभाषिणी।
प्रतिजाने भविष्यामि, सततं सुखदायिनी।।

मैं सेवा, स्वच्छता तथा प्रियभाषण का अभ्यास बनाए रखूंगी। ईर्ष्या, कुढ़ने आदि दोषों से बचूंगी और सदा प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूंगी एवं परिवार के सदस्यों को प्रिय वचनों एवं सादगी, सेवाभाव से सभी को खुश रखूंगी।

७. देवस्वरूपों नारीणां, भर्त्ता भवति मानवः।
मत्वेचि त्वां भजिष्यामि, नियता जीवनावधिम्।।

नारी के लिए पति,देव स्वरूप होता है, यह मानकर मतभेद भुलाकर सेवा करते हुए जीवनभर सक्रिय रहूंगी, कभी भी आपका अपमान न करूंगी। संतानों को भीआपके सम्मान की शिक्षा देकर कर्मनिष्ठ बनाऊंगी।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।

(अनेन पुनस्तथैव तस्मादेव कुंभातथैव जलेन वधूवरोऽभिषिञ्चति)

फिर उसी प्रकार करुण कलश से वर कन्या के शरीर पर जल का छींटा लगावें। मंत्र-

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्ता न ऊर्ज्जेदधातनः। महेरणाय चक्षसे।
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिवमातरः।।
तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

(ततः सूर्यमुदीक्षस्वेति वधुं संबोध्य वरो वदेत्)

वर कन्या से सूर्य के दर्शन करने को कहे, तब कन्या सूर्य को देखे, वर नीचे लिखे मंत्र पढ़े :-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत श्रणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

पढ़े :-

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्येमयि। मह्यं त्वऽऽदात्
बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्।।

(अथ वरो वधू दक्षिणांगस्योपरि हस्तं नीत्वा तस्याः हृदयमालभेत्।

वर कन्या के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ रखकर कन्या के हृजदय से लगावे और यह मंत्र पढ़े:-

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचितं तेऽअस्तु।
मम माचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

(वधूर्वरस्य वामभागे उपविश्यति)

कन्या को वर की बाईं तरफ बैठा दें, फिर उसी समय वर को दक्षिण तरफ बैठा दें।

(अथ सुवर्णांगुलीयकेन वधूमभिमंत्रयति वरः)

वर सोने की अंगूठी से कन्या की मांग में रोली भरे। मंत्र :-

ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा समेत पश्चत।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथस्तं विपरेतन।।

(अथ स्विष्टिकृत होमः)

आचार्य अग्नि में घी की आहुति दें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये.

(स्त्रुवावशिष्टाज्यस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः)

स्त्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दें।

(वरेणसंस्त्रुव प्राशनम्)

वर उस स्त्रुवे के घी को मुंह से लगावे। फिर आचमन कर हाथ धोवे।

मनसम्पते ऽइमं देवयज्ञ स्वाहा।।
व्वातेधाः स्वाहा।। इदं.।। इति वर्हिहोमः।

ऐक्षिक :- अथ पूर्णाहुति विधान: (उत्तर भारत में नहीं)

किन्हीं आचार्यों के मत से विवाह में पूर्णाहुति करना वर्जित है जिन का जैसा मत हो वैसा करें।

(ततः उत्थाय वधू दक्षिणहस्तेन स्पृष्टैः स्त्रुवस्थघृतपुष्पफलैः पूर्णाहुतिं कुर्यात्)

कन्या को खड़ी करके उसके दाहिने हाथ में स्त्रुवा दें और उस पर घी, सुपारी रखकर नीचे लिखे मंत्र से अग्नि में पूर्णाहुति करावें।

ॐ मर्द्धानंदिवोऽअरतिम्पृथिव्यां वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कवि साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा।।
इदमग्नये न मम।।

(पुनः अग्नौ घृतधरां दद्यात्)

उसके ऊपर नीचे लिखे मंत्र से घी की धार छोड़ें।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण।
सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा।।

इस चल को उपनयन कुशा से अपने ऊपर छिड़क लें और कुश अग्नि में छोड़ दें। वेदी के चारों तरफ जो कुशा कुशकंडिका के समय रखे गए हैं उन सबको उसी क्रम में उठाकर घी में बोरकर नीचे लिखे मंत्रों से अग्नि में छोड़ दें –

ॐ देवा गातु विदो गातुं विल्वा गातु मित।

मनसस्पत इमं देव यज्ञ गुंग स्वाहा वातेधाः स्वाहा।

भस्म लगावे–स्त्रुव से अग्नि का भस्म लेकर वर निम्न मंत्र से क्रमानुसार अपने लगावे–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने – इति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् – इति ग्रीवायाम्।
ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम् – इत दक्षिण बाहु मूले।
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् – इति हृदि।

भूयसी दक्षिणा–इसके बाद भूयसी दक्षिणा का संकल्प कर दें।

अद्य विवाह कर्मणि न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् भूयसी दक्षिणां नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

(ततो वरो पूर्णपात्र दक्षिणां ब्रह्मणै दद्यात्)

वो जो ब्रह्मा बना है उसको वर पूर्णपात्र पर दक्षिणा धर के दे – संकल्पः

ॐ अद्यहेत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माहं कृतैतिद्विवाहहोम कर्म्मणि कृताकृता वेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुः प्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्र दानं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्राय

अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(दान प्रतिष्ठा संकल्पः)

ॐ अद्येत्यादि. पूर्णपात्रदानप्रतिष्ठासांगताफलप्राप्त्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः) ब्रह्मा की गांठ खोल दें।

ॐ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु इति।।

(वर वध्वो) प्रणीता जलेन पवित्रे गृहीत्वा शिरः संमृज्य)

वर कन्या दोनों के ऊपर प्रणीता के जल का पवित्रे से छींटा दें।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।

(इत्यैशान्यां सपवित्रां सजलांप्रणीतां न्यब्जी कुर्यात्)

प्रणीता पात्र को पवित्रे-सहित ईशान दिशा में औंधा कर दे।

अथ वर्हिहोमः

(ततस्तरण क्रमेण वर्हिरूत्थाप्य आज्येनभिधार्य वक्ष्यमाणमंत्रेण हस्तेनैव जुहुयात्)

वेदी के चारों तरफ की सब कुशा उठाकर अग्नि में डाल दें। मंत्र :-

ॐ देवा गातु विदोगातुं वित्वा गातुमितः

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां.।।

(ब्रह्मणो वरः गां ददाति ग्राम्यं राजन्यः अश्वं वैश्यः शूद्रो दक्षिणा यथाशक्ति)

(कर्मकर्तृसंकल्पः)

विवाह कराने की दक्षिणा में आचार्य गाय, क्षत्रिय ग्राम, वैश्य घोड़ा अन्य जाति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा दें, पहले कन्या के पिता से संकल्प करावें।

अद्येत्यादि. अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माऽहं आत्मनः

पुत्री-विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्राय

अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(आचार्य को दे दें) फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करें।

(वरः कर्मकर्तृसंकल्प कुर्यात्) वर कर्मकर्त्ता का संकल्प करे।

अद्येत्यादि. अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माहं मम
विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीयशपुरुषनारायणप्रीत्यर्थं स
वधूकोऽहममुकगोत्राय
अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

(आचार्य को दे दें) फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करें।

अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माहं मम विवाह.

(नरः कन्योः तिलकं कुर्यात्) आचार्य वर कन्या को तिलक करें)

आयुष्कामः यशष्कामः पुत्रकामस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामाः भवन्तु ते।।

आचार्य अपने हाथ में पुष्प चावल लेकर वर-कन्या को आशीर्वाद दें औरये मंत्र पढ़ें-

श्रीकृष्णः कुशलं करोतु भवतां धाता प्रजानां सुखम।
निर्विघ्नं गणनायकः प्रतिदिनं भानुः प्रतापोदयम्।।
शम्भुस्ते धनधान्य कीर्तिमतुलां दर्गाऽरिनाशं सदा।

गंगा ते खलु पापहा निशिदिनं लक्ष्मीस्सदातिष्ठतु।।

आचार्य अपने हाथ के फूल व चावल वर को दे, फिर पुण्य सत्र समा वेदी करावे और इसके पश्चात अग्नि में एक टका गिरवाकर चौरी रखकर तौला उल्टा कर दें। फिर आचार्य वर और कन्या के पिता से गणेशजी पर चावल छुड़वाएं। मंत्र :-

विसर्जन मंत्रः

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठं स्वस्थानं परमेश्वर।
यतर ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छहुताशन।।

गणेशजी और लक्ष्मीजी हमारे गृह में रहें और देवता अपने-अपने स्थान का जायें। आचार्य तिलक करें और सेवल कर दें, फिर आगे और कन्या पीछे, छापे के आगे जाएं।

गोने की प्रक्रिया

वर-वधू को बैठाकर गौर गणेश कलश नवग्रह की पूजा कराने के बाद चांदी की बिछिया अंगूठा कलश में छुआकर कोई सौभाग्यवती स्त्री कन्या को पहनावे। फिर अक्षत-सुपारी व द्रव्य रखकर दोनों की गांठ बांधें और कन्या को बाम भाग में बैठावे।

फिर रीति वाली नई दौरी में चना-दाल-चावल की खिचड़ी के साथ गुड़-हल्दी-सुपारी व द्रव्य लेकर ऊपर वधू की तथा नीचे वर की अंजुली बनाकर पांच अंजुली भरावें। निम्न मंत्र पढ़ें :-

(१) ॐ प्रथमोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सीतारामाभिवन्दितः।
सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्।।
(२) ॐ द्वितीयोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सत्या कृष्णाभि वन्दितः।
सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्।।
(३) ॐ तृतीयोऽञ्जलिरियं पूर्वम गौरी शंकर वन्दितः।

सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्।।
(४) ॐ चतुर्थोऽञ्जलिरियं पूर्वम् सावित्री ब्रह्म पूजितः।
सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्।।
(५) ॐ पंचमोऽञ्जलिरियं पूर्वम् कुंती बाण्डु प्रपूजितः।
सर्वेषु मम कार्येषु शुभदः सर्वदा भवेत्।।

फिर ऊपर वर की तथी नीचे की अंजुली करके निम्न मंत्र से दो अंजुली भरावें।

ॐ बागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।

लोकाचार में इन सातों अंजुरी की खिचड़ी वर के पिता को दी जाती है। फिर वर-वधू के हाथ में छुआकर दो-दो अंजुरी खिचड़ी दोनों ओर के आचार्य को तथा एक-एक अंजुरी नाऊ व एक अंजुरी भांट को दी जावे। आचार्य को दक्षिणा व नाई को न्यौछावर देकर वर-वधू को कोहबर में भेज दें।

कंगन खोलना

वर-वधू को बिठाकर गौर-गणेश-कलश-नवग्रह की पूजा करायें। वर के हाथ में बंधे कंकण (कंगन) खोल दें।

ॐ कंकणं मोचयाम्यद्य रक्षां वै न कदाचन।
मयि रक्षां स्थिरां दत्वा स्वस्थानं गच्छ कंकण।।

कंकण (कंगन) खोलकर गौर के पास रख दें। वधू गौर को सिन्दूर चढ़ाकर सोहाग ले ले। आचार्य वर को तिलक करे तथा वधू की गोद भर दे। आचार्य को दक्षिणा, नाई को न्यौछावर दें। देवताओं का विसर्जन कर वर-वधू आसन से उठकर बड़े-बूढ़ों के पांव छुएं।

विनय पद्यावलि:

कन्या पक्षे

एतत्सभान्तर्गतपण्डिताग्रे, वक्तुं समर्थापि न भारती मे।
तथापि श्रीमद्भवतः प्रसादात्, ब्रब्रीमि पद्यं खलु धाष्ठर्य्तोऽहम।।१।।

इस सभा में आए हुए जो आचार्य जन हैं उनके आगे मेरी वाणी निश्चय करके आपका यश वर्णन करने में समर्थ नहीं है तो भी आपकी प्रसन्नता के लिए धृष्टतापूर्वक मैं एक श्लोक कहता हूं।।१।।

गत्वाऽहूय गृहागतेषु न कृतं पाद्यादिभिस्सेचनम्।
स्थानं नैवनिवेदितं सुविपुलं, वाच्यंकिमन्यत्परम्।।
छिन्नस्वल्पपलाशपत्रपुटकैः रात्रौगृहेवञ्चितः।
स्मादाहतलज्जयापुनरहो, वक्तुं न शक्ता नयम्।।२।।

हे संबंधीजी! आपके घर जाकर, आपको अपने यहां बुलाकर भी अपने घर पर हमने पाद प्रक्षालनादि द्वारा भी आपकी सेवा नहीं की और श्रेष्ठ बड़ा जनवासा भी नहीं किया, इससे अधिक क्या कहा जाए और छिन्न-भिन्न छोटे पलाश के पत्तों की पत्तलें और दोनियां

आपके आगे रखकर दी गईं इसलिए लज्जा को प्राप्त होकर हम कुछ कहने में असमर्थ हो रहे हैं।।२।।

वर पक्षे

अस्यां सभायां परमविदुषां पण्डितानामवाच्यम् कुर्त्तुं शीलिनस्तथाकान्तिमान सम्पूर्णैगुणैरुल्लासिता- स्सभाचातुरा महाशया उपस्थितास्सन्ति तान् प्रतितुच्छमनुष्योहं किंचिद्वक्तुं कथं शक्नुयामस्तथापि भवद्दर्शनादुत्पन्नानन्दात्तथा शिष्टाचारपरिपालनत्वादेकेन श्लोकेन भवतां पार्थनां करोमि।।३।।

इस सभा में परम् विद्वान पंडितों को मात करने वाले शोभायमान सकलगुण निधान सभी चतुर महोदय विराजमान हैं,उनके आगे मैं क्षुद्र पुरुष कुछ कहने में किस प्रकार समर्थ होसकता हूं? तो भी शिष्टाचार का पालन करने के लिए मैं एके श्लोक से आपकी स्तुति करता हूं।।३।।

आयातस्तव मंदिरे बहुविधैरासादितैरासनैः।
पीयूषाकरनिर्गतैरपि जलैर्मार्गश्रमो दूरतः।।

कर्पूरान्वितभोजनैर्बहुविधैस्सन्तर्पितास्सज्जानाः।
सौजन्यत्वमुदारताम्पुनरहो वक्तुं न शक्ता वयम।।४।।

हे संबंधीजी! आपके घर आकर अनेक प्रकार के पकवान खाकर और अमृत जैसा मीठा जल पीकर हम सबकी थकावट दूर हो गई है और अनेक प्रकार के कपूर मिले हुए भोजनों से सज्जनों को आपने तृप्त किया, आपकी सज्जनता तथा उदारता का वर्णन करने में हम असमर्थ हैं।।४।।

कन्या पक्षे

एकदा हंसः सकलानम्भो निवेशान् पश्चन् सन् भूमिं भ्रमित्वा किंचिदल्प पल्लवमभ्यगात् तदा सरः सहसोत्थाय हंसस्याग्रेञ्जलिं बध्वा हंसस्य नोचितां वस्तु सामग्रीमुपेक्ष्य केवलवाङ्मात्रेण विज्ञापयत्राह तथैव वयमपि भवतां विज्ञाप्तिः कुर्मः।।५।।

एक समय एक हंस सम्पूर्ण जलाशयों को देखता हुआ पृथ्वी पर घूमता-घूमता किसी छोटे जलाशय अर्थात तड़ाग के पास आया। तब तड़ाग सहसा उठकर हंस के आगे हाथ जोड़कर उसकी सेवा के योग्य उचित सामग्री अपने पास न समझ कर जैसे केवल वाणी मात्र से हंस की स्तुति करता हुआ बोला वैसे तो हम आपकी स्तुति करते हैं।।५।।

(46)